ISSN : 2278-2133

# चक्रवाक्

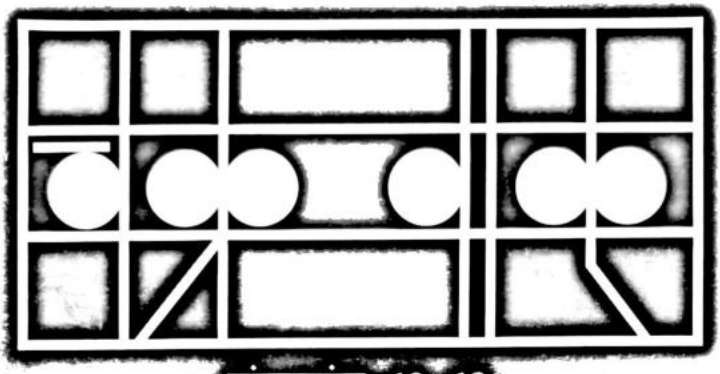

संयुक्तांक-42-43

साहित्य-शोध-संस्कृति-समाजमुखी
त्रैमासिक पत्रिका

Scanned with CamScanner

# चक्रवाक्

( त्रैमासिक )

( विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-द्वारा यथाधिसूचित संदर्भित
शोध-पत्रिका, क्रम-संख्या-231, जर्नल-नंबर-64014 )

संयुक्तांक-42-43 अक्टूबर 2017-मार्च 2018

मूल्य : तीस रुपए

**संस्थापक एवं प्रधान संपादक**
डॉक्टर विन्देश्वर पाठक

**संपादक**
निशांतकेतु

**कार्यकारी संपादक**
कुमार दिलीप

**सहायक संपादक**
डॉक्टर मणि भूषण मिश्र
डॉक्टर अशोक कुमार ज्योति

**संपादकीय सलाहकार-समिति**
आरती अरोड़ा
अनीता अग्रवाल
तरुण शर्मा
शशिधर

**शब्द-संयोजक**
श्रीकांत राय

**प्रकाशकीय कार्यालय**
रामचंद्र झा-द्वारा
सुलभ इंटरनेशनल
सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन
आर्.जेड्.-83, महावीर इन्क्लेव,
पालम-डाबड़ी-मार्ग, नई दिल्ली-110 045
से प्रकाशित एवं एक्स्ट्रीम ऑफिस
ऐड्स (प्रा.) लि., भनोट बिल्डिंग बेसमेंट
(सिंडिकेट बैंक के नीचे), कॉमर्शियल
कॉम्प्लेक्स, नांगल राया,
नई दिल्ली-110 046 से मुद्रित।

**इ-मेल :** chakravak2007@gmail.com
**RNI No.-**DELHIN/2007/21464
**ISSN :** 2278-2133

इस पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्यों के स्रोत और प्रामाणिकता का दायित्व संबद्ध लेखकों का है। इस संबंध में प्रकाशक उत्तरदायी नहीं। किसी भी प्रकार का पत्राचार 'चक्रवाक्' के संपादक के नाम से करें।



Scanned with CamScanner

# विषय-सूची


**संपादकीय**

परमात्मा का नामकरण.....5

**अभिभाषण**

'एकात्म मानववाद' के प्रयोक्ता
पंडित दीनदयाल उपाध्याय /
**पद्मभूषण डॉक्टर विन्देश्वर पाठक**.....21

**भाषा-विमर्श**

संस्कृत-भाषा की वर्तमान स्थिति : एक मूल्यांकन /
**डॉक्टर शुभंकर मिश्र**.....27

**कहानी**

अमिया / **अर्चना कुमारी**.....36

जीवनी शक्ति / **डॉक्टर सुषमा सिंह**.....75

**लिपि-विमर्श**

राष्ट्रलिपि के रूप में देवनागरी/
**डॉक्टर एन्.एस्. शर्मा**.....46

**शहरनामा**

पाटलिपुत्र की महिमा बुलाती है आपको/
**नारायण भक्त**.....50

**साक्षात्कार**

स्वच्छता मनीषी पद्मभूषण डॉ. विन्देश्वर पाठक से
एक साक्षात्कार / **डॉक्टर विजय कुमार झा**.....58

**शोध-निबंध**

कथाकार 'प्रसाद' के भूस्वामी पात्र/
**प्रोफेसर सुधा कुमारी**.....66

विष्णु प्रभाकर के उपन्यास 'कोई तो' का
समाज-भाषावैज्ञानिक अध्ययन /
**डॉक्टर अशोक बाचुलकर**.....103

प्रवासी जीवन : सांस्कृतिक ह्रास से गुजरते हुए/
**डॉक्टर सुप्रिया पी**.....109

**आलेख**

हिंदी-कविता में गांधीवाद /
**डॉक्टर परमलाल गुप्त**.....78

**गज़ल/गीत/कविता**

दोहा / सोरठा / **डॉक्टर गणेशदत्त सारस्वत**.....82

नज़र / **डॉक्टर कल्पना झा**.....83

दर्द गुनगुनाने हैं, अब आज कैसा है /
**पंडित सुरेश नीरव**.....85

हमारे देश की माटी / **मनीषा जोशी**.....108

प्राण रमते हैं नदी में / **डॉक्टर राजेंद्र मिलन**.....120

**लघुकथा**

लकड़ी की सीख/
**डॉक्टर बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'**.....84

भूख / **श्रीकांत चौधरी**.....99

**वैचारिक निबंध**

सृष्टि की रचना / **राजेश कुमार सिंह**.....89

साहित्य का सौंदर्य/
**डॉक्टर पशुपतिनाथ उपाध्याय**.....94

**स्वास्थ्य**

हास्यं शरणं गच्छामि / **डॉक्टर शशि गोयल**.....86

**साहित्य-चिंतन**

इक्कीसवीं सदी का साहित्यिक चिंतन और उसकी
उपलब्धियाँ / **शैल वर्मा**.....97

**व्यंग्य**

मुखिया जी / **रामचरण यादव**.....100

**मूल्यांकन**

'जीवन का निरुक्त' : व्यावहारिक विश्लेषण/
**डॉक्टर कृष्णानंद द्विवेदी**.....115

**पत्र-मत**.....121





Scanned with CamScanner

# प्रवासी जीवन : सांस्कृतिक ह्रास से गुजरते हुए

○ डॉक्टर सुप्रिया पी

भूमंडलीकरण की आर्थिक स्थितियों ने विभिन्न राज्यों की भौगोलिक सीमाओं को एक-दूसरे के बहुत निकट ला दिया है। विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनयिक संबंध होने के कारण यह संभव हो सका। अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, जापान, ईरान, बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया, नाइजीरिया, रोम-जैसे विदेशी राष्ट्रों में बड़ी संख्या में भारतीय बसने लगे। देश की बड़ी संख्या के इस प्रकार विदेश में जा बसने से सांस्कृतिक विस्थापन अथवा डायस्पोरा की विकट समस्या भारतीय समाज में उठ खड़ी हुई है।

भारतीयता हर भारतीय की अस्मिता का अभिन्न अंग है। उसका रूप-रंग, आचार-विचार और भावनाओं का उत्स भारतीयता में है। परिस्थितियाँ या महत्त्वाकांक्षावश देश छोड़ने पर भी उससे पूर्णरूपेण कटना उसे मंजूर नहीं है। वहाँ जाकर भी वे वतन की याद में पुनः अपनी जमीन और संस्कृति से जुड़ने के छिटपुट प्रयत्न करते हैं–कभी यहाँ की ठेठ वेशभूषा धारण कर, कभी कुछ सांस्कृतिक आयोजन कर, कभी कुछ लोकनायकों और सिने सितारों को आमंत्रित कर तो कभी बाबाओं-साधु-संतों के कीर्तन-भजन कराकर। भारतीयों के इस प्रकार के विदेश-पलायन ने हमारी सामाजिक संरचना के ताने-बाने को बिखराकर रख दिया है। वैश्वीकरण का यह बहुत भयावह पक्ष है। विदेश में बसे भारतीयों की युवा-पीढ़ी वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में अपने नए जीवन-मूल्य किस रूप में तलाश रही है, सांस्कृतिक विस्थापन की यह भी एक बड़ी समस्या है।

कमल कुमार के 'हैमबरगर' की रतींद्र भारत से अमेरिका आई थी। उसके मंगेतर कुलवींद्र के उसे गर्भवती कर मुकर जाने से अपने घर की इज्जत बचाने, उसे भारत छोड़ना पड़ता है। अमेरिका में सारी सुख-सुविधाओं और आराम के बीच भी उसका मन उदास-हो जाता। उसे लगता कि अपने शहर, अपने घर, अपने लोग उससे जुड़ी तकलीफें और तंगी में वह ज्यादा खुश थी। विदेश के वातावरण में वह और भी टूट जाती है। दूर तक फैली सफेद सूनी सड़कों को देखकर उसका मन दहशत से भर जाता था। वहाँ सब उसे पराया लगता–धूप, हवा, पानी, परिवेश और लोग। सूनसान रातों में



Scanned with CamScanner